

श्री नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्री नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मंदवे. इकावेसिद्धि लाङ्गने. ईकावेगुहव लूक दं ईकावेमनमरुत॥

॥ ॥ मगविय॥ दीपायेहनाधुने. सर्वनीमीरुनाधने॥ एतनेल

समूहाले. मयादं पुगुधनां॥ ॥ गायलेहाले॥ यधमीवाहुगुधर

वा. हुगुधनां गत॥ अतदं आनिशध. नुवेवादीमहाधमहा॥

पुनः॥

॥ धनमालपूजा॥ धुक्ते॥ समंताहनुसोवडा अलया

दिशि संस्थिता॥ आयां पुसर्ववडायाः सिद्धिमनां प्रदायि म॥ ॥

आनयाया॥ स्वतावगुहाः सर्वधर्मा स्वतावगुहाहं॥ ॥ पादार्घ्यतय

जाकिलंख॥ पदमनृत्यधनरहात्रकायपायेपरीकृष्णाहा॥ ॥

स्नानयाया॥ पप्रनृत्यधेनायसाहा॥ वज्रमालायसाहा॥ वज्रगीता

यसाहा॥ उमत्रकायसाहा॥ सिद्धलंतिक॥ वज्रसिंहनंसाहा॥ ऊर्ध्व

वज्रवसुसाहा॥ सांख्य॥ वज्रपुष्पसाहा॥ नेवय॥ वज्रनेवयंसाहा

मता॥ वज्रदीपसाहा॥ नासलेहाले॥ ॥ धनलजधडापूजा॥ यथा

र्घमय॥ वात्रुहीदवी हृद्यनकायपादा र्घपती कृष्णाहा॥ ॥ स्नान
 य॥ ज्ञानेदस्वाहा॥ पत्रमानेदस्वाहा॥ विप्रमानेदस्वाहा॥ सहजानेदस्वा
 हा॥ सिद्धः स्वां. ऊजका. मगवियः॥ ॥ स्नाययाय॥ वृक्षातालधना
 हनिधमन्ना-वीक्षधनातात्रनी॥ वीक्षधनातात्रनी॥ वीक्षधनातात्रनी॥
 सिंहातनाक्षतनो. नदीक्षवदसृदंगवादनयना. गीतायितः सुव
 न॥ सार्धं नृत्त्यकनास्वरावजनितानाम्पः सदा पातुवध॥ गालयात॥

वात्रुहीचमहादेवी. सुंदरी श्रीसुंदरी॥ प्रेताम्भमाहरीदेवी. तस्ये
 मा दव्येनमानम॥ वात्रुलिया॥ ॥ विसर्जनयाय॥ गाललडाका
 य॥ आदिसमयविय॥ नृक्षर्गमचलगीत॥ ॥ थनगुनर्मद
 लदन॥ ॥ नमावजसस्वाय॥ ॥ गुनवदं गुनधर्म. गुनसंघं तथेव
 च॥ गुनवजधन॥ श्रीमान्. गुनं सर्वनमास्यहे॥ किं तन॥ ॥ लंघमा
 धनयाय॥ वीवजादकं नृमृगं रावतुं स्वाहा॥ ॥ सनान॥ इधहि

जागमापुनः सनायिनासर्वतथागता तथाहंसनापयिष्यामि बुद्धि
यनवानिना ॥ ॐ आसर्वतथागता रिषकसमययिष्ये ॥ ॥ नाच
या ॥ ॐ त्रिमूर्ते जीवते स्वाहा ॥ ॥ असहाय ॥ कायविष्णुधनस्वाहा
पूजार्त्तसहाय ॥ प्राकृष्टी प्रतीक स्वाहा ॥ ॥ पूजार्त्तथिय ॥ नमो
गवते पृथ्वीक पुत्राय तथागतायार्हते सम्यकसेवकाय ॥ तत्र
पृथ्वी महापृथ्वी सृष्ट्य पृथ्वी संतुष्ट्य पृथ्वी वकीनस्वाहा ॥

प्रिकाया विष्णुना ॥ ॐ आरु ॥ ऊजार्त्तवाहनिने ॥ सर्वपापानयनय
रे ॥ ॥ आसनसामिषवज्ञासनस्वाहा ॥ ॐ मसिधनिवडिधि
महापुनिसन्तुष्ट ॥ ॐ आसर्वतथागता रिषकसमययिष्ये ॥ ॥ विथनेतिय ॥ ॐ
निलकविहस्वस्वाहा ॥ ॥ मंदलथिल ॥ वज्रलमडे ॥ ॥ म
दलथिय ॥ दानेत्तमयसेवनावसहितं श्रीनेवसेमार्त्तने कृति
ऊजपिपीलिकापनयने वीर्यक्रियात्तपने ध्यानेत्तगुरुधमकवि

कनकं प्रहसन्तु खलु ॥ नृणां पात्रमिमांशु वलरुत-कृत्वा म
नर्मधुले ॥ एवमिदं कनकवर्षं सर्वभोगे विभक्तं ४ मन्त्रमनुजविभक्ति
वीडवग्दीयतकोति ॥ धनकनकसमृद्धो जायते नाकुर्वे ॥ ४१ ॥ सुग
तवनगृहस्मिन् कार्यकर्माति कृत्वा ॥ ४२ ॥ सुलेख्यं सर्वतथागताधिनि
ये दुस्साह ॥ ॥ लाहानपुत्रक ॥ ४३ ॥ वैदर्भ विमलसाह ॥ ॥
ध्यान ॥ संया विधिं तं ह्यमिमं यंकानादिचतुर्वीजसंज्ञां वाच्यं

निजलावती संयापनिसीकात्रयमनुमीदले नानसिंहासनस्थिते प
त्रये डभीवजसन्निधि एकेकमखं ७ कलवर्षं वज्रवज्रवै अथनं वि
चित्रा एतरी शिप्रसिखीवनधनिधं नीलवर्षं आख्यालेकं मोलितं
गुनरुदानकं आत्मा ॥ ४४ ॥ इदं वंहा ॥ पादाद्यं तय ॥ श्रीगुनवज्रस
त्वाय पादाद्यं पती कृत्वा हा ॥ ॥ स्वां वाय ॥ ४५ ॥ मध्यमनवनम ४॥
४६ ॥ अथ मन्त्रवनम ४॥ ४७ ॥ इदं मन्त्रवनम ४॥ ४८ ॥ इदं पूर्वविदहाय

नमः॥ ॐ नमो ब्रह्माय नमः॥ ॐ नमो अथ नमो दावलीय नमः॥ ॐ नमो
उत्पन्नक नमः॥ ॐ या उप दीपाय नमः॥ ॐ ना उप दीपाय नमः॥
ॐ ला उप दीपाय नमः॥ ॐ वा उप दीपाय नमः॥ ॐ यग ऊ नत्ताय
नमः॥ ॐ नमो पुन्य नमः॥ ॐ नमो अथ नमः॥ ॐ नमो अथ नमः॥ ॐ नमो
नमः॥ ॐ या नमः॥ ॐ ना नमः॥ ॐ ना नमः॥ ॐ ना नमः॥ ॐ ना नमः॥
॥ ॐ ना नमः॥ ॐ ना नमः॥ ॐ ना नमः॥ ॐ ना नमः॥ ॐ ना नमः॥

[illegible]

和

प्रायस्वाहा॥ इन्द्रगन्धर्वास्वाहा॥ इन्द्रवायवस्वाहा॥ इन्द्रनेत्रास्वाहा॥
 इन्द्रलोकास्वाहा॥ इन्द्रमायस्वाहा॥ इन्द्रवज्रस्वाहा॥ इन्द्रविमानस्वाहा॥ इन्द्रवज्राय
 स्वाहा॥ इन्द्रसूर्यायस्वाहा॥ इन्द्रपृथिव्येस्वाहा॥ इन्द्रवसुविश्वायस्वाहा॥ इन्द्रा
 गस्त्यस्वाहा॥ इन्द्रसूत्रेणस्वाहा॥ सर्वदिग्विदिगलोकपालेणस्वा
 हा॥ सिद्धं कुरुंका स्वां नैवद्यमनविय॥ ॥ मन्त्रप्रयाय॥ ॐ द्वादशा
 महानागा लोकपाला महर्षिर्द्विका॥ दक्षादिर्द्विस्थितावीना लोकपाले

नमाम्यहं ॥ ॥ लेखजाकिंतया ॥ ॥ अगाऊन ॥ ॐ वज्रसूत्रस
 मयमनुपालय वज्रसूत्रसूत्रनापतिष्ठ हृदयमहव सुतोशामहव सु
 याशामहव अतनकतामहव सर्वसिद्धिभययुक्त सर्वकर्मसूत्र
 मविष्णु भुयंकनरुं हेह हहहाह गवन् सर्वतथागतवज्रमाममं व
 वजीहवमहासमयसूत्रा ॥ ॥ विसर्जन ॥ कृतेवं सर्वसूत्रा
 थं सिद्धिदत्ताय नमः ॥ गच्छ धीषु विषय पुनरागमनाय व ॥

श्री
 गुरु
 प

ॐ आरूं ॐ आरूं गच्छ रघु मंडलं विसर्जनम् ॥ ॥ ध्येनीनि
 काय रपूजा ॥ स्वतावभुद्धा सर्वधर्मा स्वतावभुद्धाहं ॥ ॥ धुं कन
 रगवती वज्रया गिनी देवी समानाधनाय ॐ देवजधूमे निमं प्रया
 मि ॥ ॥ जाकिलेखतया ॥ वज्रया गिनी देवी एहानकाय पाधा
 यमनार्घ्यपुती कृष्णाहा ॥ ॥ स्वांतायय ॥ ॐ वं वज्रया गिने स्वाहा
 ॐ हं आया मिने स्वाहा ॥ ॐ कीं मां माहिने स्वाहा ॥ ॐ कीं कीं संवा निने स्वा

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

हा॥ उं रं रं सं प्रसि न्ये स्वाहा॥ उं हं रं रं चि काय स्वाहा॥ उं हं रं रं गंध स्वा
हा॥ वज्र वं रं स्वाहा॥ न वं रं स्वाहा॥ वज्र दीप स्वाहा॥ ॥ स्वाहा॥ ॥ श
मिनी या मिनी वें व. माहिनी वा मिनी गथ॥ प्रसि नी वें चि का वें वें वें वें
पथ मा म्यहं॥ ॥ सिद्ध तन॥ उ या ता ग ल व क्र म॥ नि न धू ता वि श्रु क
ता हा स्व ना॥ द ग थ नि पि म या वि ला क म हि ना पी यू ख धा मा प्र ना ॥
व द हान प्र सा मृ ना वि क ल सा. सा नें द सं द श ह दा. हा वा हा वें वें वें

सा वि न हि ता वा ना हि का पा गु मं॥ ॥ मं उ ल स गि का. मि धा
य॥ ॥ थ न मृ द्धि स म य का य ४॥ ॥ उ ज मा न न ह स्य ग न् मं उ
ल द क॥ थ न स मा धि द न॥ ॥ मृ नी ल व वा॥ ॥ जा कि का
य॥ स म न्ना ह न गु मा ना थ. मृ ४॥ या दि रु सं स्थि ना॥ क र्दु मि न्ना प
ही ना थ. मं उ ले क न्ना ल का॥ यू स मा कं पू र्ण ना थ य. व स मा कं का
य ४॥ म न्ना ह क न स्य ह गा वें. प्र सा द क र्दु म हि ति॥ जा कि नि न ॥

समानलुग्याय॥

जालदेवतापुत्र

धर्मरत्न वज्रधार्य सुरत श्री महाबिहार

II-49

ननु श्रीचक्रसंवत्सरागमसामिसगद्वीदजसुखागमैद्य॥
 वीथभवननाथं श्रीमंतचक्रसंवत्सरागम॥ ॥ आनयाय॥ स्वलाव
 सुखाऽसर्वधर्माः स्वलावमुखाहं॥ श्रीकायमदयंज्ञानं हकात्रेहदुव
 र्जितं॥ नृकात्रेनृपनाभयं ककात्रेस्थितं हविर्ग॥ सर्वसत्ताद्वय
 हलाः मुकलवर्तं विदुः संवत्सरागमसामिसगद्वीदजसुखागमैद्य॥ ॥ मं प्रसादः॥
 धन॥ हं हलादीं अखसाहा॥ ॥ आने॥ दीकानेनेपप्रलक्ष्मं मं का

त्रयसामकी॥ ह्युद्विगुजांकात्रेताकायऽह्युद्विगुजावजुवजुधं
 अधन॥ नयाऽसंयुटयागनद्वीहं गपलक्ष्म॥ ॥ आधनी॥ ॥
 हं हलादीं अखसाहा॥ हं सर्वहजकामिनि सर्वहजलक्ष्मधनि गुम्
 वद्विनि कायधनी सर्वद्वयव्यापिनि लक्ष्मधनरु॥ अमृतममृतं
 प्रवक्ष्यामि॥ हकाभहनतेवर्तं हाकाभगं वनाभने॥ दीः काभवीर्यं
 ताव अकाभतामृतं पलक्ष्म॥ ॥ जाकिलं खतय॥ हं वान्तीद्वय
 दाधमती कसाहा॥ ॥ खानवाय॥ हं वान्तीद्वयसाहा॥ हं का

वनद्वये स्वाहा ॥ पूर्णगिनिद्वये स्वाहा ॥ आनंदस्वाहा ॥ पत्रमानंदस्वा
 हा ॥ विप्रमानंदस्वाहा ॥ सहजानंदस्वाहा ॥ ॥ सिद्धं स्वां कुरुं कुरुं स्वां
 मत्तविय ॥ ॥ स्तोत्र ॥ नीलनीलां च नीलां लालां च मंगलसंगिनी ॥
 लज्जामित्वां महावाक्क मृज्जमां हवमां मकि ॥ ॥ आकर्षयन्त्याय ॥ ॐ
 वज्रं वज्रं आकर्षय ॥ वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं
 वज्रं वज्रं वज्रं वज्रं ॥ ॥ पादार्घ्यं ॥ ॐ श्रीवज्रं हृन्नुकपवनसत्त
 कानाय पाशाद्यैश्च मनं प्रतीक स्वाहा ॥ ॥ स्तोत्रवाच्य ॥ ॐ श्रीवज्रं

हृन्नुकं हृन्नुकं जाकिनीजालसंवने स्वाहा ॥ ॐ श्रीहृन्नुकं हृन्नुकं स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ
 सर्ववृद्धजाकिनीयवज्रवर्धनीयवज्रवेगावनीयई ३ हृन्नु ३ स्वाहा ॥
 ॐ जाकिनीयई हृन्नु स्वाहा ॥ ॐ वज्रकभटकई हृन्नु स्वाहा ॥ ॐ कनरप्रवं
 जई हृन्नु स्वाहा ॥ ॐ हृन्नु २ नु नावनीयई हृन्नु स्वाहा ॥ ॐ श्रीस्वकवेगाई
 हृन्नु स्वाहा ॥ ॐ किलिरसवीनई हृन्नु स्वाहा ॥ ॐ काकास्थयेई हृन्नु स्वाहा
 ॐ यमदाजीयई हृन्नु स्वाहा ॥ ॐ वीजीयादिमृष्टमममनाय स्वाहा ॥
 सिद्धं कुरुं कुरुं स्वां सङ्गं मत्तविय ॥ ॥ स्तोत्र ॥ सर्वहृन्नु न संवाहं कुरु

या॥ ॥ यत्र गल्लसमहाकाल-सर्ग-मग-सिद्ध-माहनि-पूजा
 याय॥ ॥ धीकन-रुगवतभीमनभीभी-विद्यनध्वन-महाकाल
 नैदिकध्वन-वेधननल-सूर्यदवतो-वज्रशक्तिनीरुदानकापाधना
 य-ॐ देवज्यपंतिमंगयामि॥ ॥ ध्यान-ॐ स्वरावधुडाऽसर्वध
 मास्वरावधुडाह॥ ॥ आदाद्य॥ ॥ रुगवतभीमनभीभी-गल्लसम
 हाकाल-नैदिकध्वनवेधननल-वज्रशक्तिनीरुदानका
 पाधनायप्रणीकुस्वाहा॥ ॥ स्वावाय॥ गल्लसयात॥ ॐ गीगक्षपतय

स्वाहा॥ गल्लधिपतयस्वाहा॥ गल्लध्वनायस्वाहा॥ गल्लपतिपूजिताय
 स्वाहा॥ ॥ महाकालयात॥ ॐ मं महाकालायस्वाहा॥ महाकालीयस्वा
 हा॥ कालीयस्वाहा॥ वतालीयस्वाहा॥ कालिकायस्वाहा॥ ॥ सर्गयात॥
 ॐ आधुर्वृद्धयस्वाहा॥ यः अहृद्धयस्वाहा॥ प्रहाहृद्धयस्वाहा॥ सुखहृद्ध
 यस्वाहा॥ प्रहाहृद्धयस्वाहा॥ धनहृद्धयस्वाहा॥ आभगधृद्धयस्वाहा॥ ध
 नहृद्धयस्वाहा॥ संतानहृद्धयस्वाहा॥ ॥ मगयात॥ ॐ वेधवधायस्वा
 हा॥ मातिरुदायस्वाहा॥ पूर्तरुदायस्वाहा॥ सूर्यायस्वाहा॥ ॥ सिद्ध-

ॐ वं वरुवा नास्तु स्वाहा ॥ हां या यामि न्ये स्वाहा ॥ को मा माहि न्ये स्वाहा ॥ ॥
संवा नि न्ये स्वाहा ॥ ईरु संवा सि न्ये स्वाहा ॥ ॥ माह नियात ॥ ॐ ऊं ह नी य
स्वाहा ॥ सुं नी य स्वाहा ॥ आ क र्शि न्ये स्वाहा ॥ माहि न्ये स्वाहा ॥ व धी का य
न्ये स्वाहा ॥ उ वा रि न्ये स्वाहा ॥ ॥ पं वा प्वा न पूजा ॥ ॥ सा प्र या य ॥ ग
त स ॥ गत पति व ह नी वं वि घ्न न ना ऊं वि ना य कं ॥ सर्व वि घ्न ह नी द वं म
धि पं न मा म्प हं ॥ ॥ महा का ॥ क स न व ह महा वी न वु छ भ स
न न ऊ वं ॥ क र्ति क पाल ध न ना र्थ महा को ल न मा म्प हं ॥ ॥ संगं या

आयु र्वे द्वि य ला वृ द्वि वृ द्वि पु हा स र्व सु थ ॥ आ रा ग्य ध न सं ता ना ॥
सं गु व सु फ वृ द्वि य ॥ ॥ मा ग या त ॥ वृ ऊं ह नी वी ऊ सं जा तं वे ष व र्म महा
क ले ॥ वृ छ भ न ल म हं वं द सर्व सं प हि दा य कं ॥ ॥ सि द्ध या त ॥ न मा
मि व रु वा ना हि सर्व पा प प्र भ व नी मा न वि धे सु नी द वी वु छ त्त्व ल द
यि नी ॥ ॥ माह निया ॥ ऊं ह नी सुं ह नी वी व आ क र्श नी व मा ह नी ॥ उ वा
ट नी व धी क न धी या मि नी सुं न मा म्प हं ॥ ॥ ध न वृ ह द र्श या त
प त्या स या य ॥ ला रा य धा न या ॥ ॥ न रु व र्म व रा ॥ ॥ वी व न या

नर्वहताकप्रया॥ उं भाई. हं हहाङीअखंखाहा॥ उं सर्वहकुकादिनी
सर्वहकुआधनि. गुधवदिनि. कोधधनि. सर्वइयापि. निआधयस्सम
समृतेसमृतेप्रवधायइं॥ ॥ पादाद्यंय॥ वानुहीदवीएदानकाय
पाद्यंखाहा॥ ॥ स्वांवाय॥ वानुहीदवीखाहा॥ सुनादवीखाहा॥ उनाद
वीखाहा॥ पेहीदवीखाहा॥ सिद्ध. ऊंका. स्वां. नेवय. थ. मत॥ ॥
स्वाप्रयाय॥ वानुहीवमहादवी. उनादवीचलोठिका॥ पेहीदवीमाहिनी
स्वा. नमाम्यमृतत्रिही॥ ॥ पाप्रपूजा॥ गभकुदहनवा॥ ॥ झापाया

ध्वंआधनयाय॥ ॥ पादाद्यं॥ उं वडकभटकहदानकायपादाद्यंखा
हा॥ ॥ स्वांनवाय॥ वडकभटकायखाहा॥ समयकभटकायखाहा॥
विसमयकभटकायखाहा॥ समयविस्मयकभटकायखाहा॥ ॥
सिद्ध. ऊंका. स्वां. नेवय. थ. मतविय॥ जालंधनादिकोसर्वानमामिम
कुदान्मदा॥ ॥ गायलहाल॥ यधर्मावान॥ ॥ धनमूलदवगा
पूजा॥ धूपचवा॥ ॥ धीकन॥ धीचकसंवतवजवागहीएदानकायाधन
य०००दंवेडधुंनिमंतयामि॥ ॥ यत्तुमंगल॥ सुनायाक॥ प्रणिविंवे॥

कसकं कन॥ अलिखकविद्य॥ वज्रहसई॥ धमं उथिला॥ पाता सं वायडाप
धूपथन॥ उपस्वांगय॥ पादार्घ्यगया॥ वक्र सं वन हृदयन कायपाद्य पुनी कस
हा॥ ॥ स्वां वाय॥ ॐ वक्र सं वनाय स्वाहा॥ जकिने स्वाहा॥ लामाय स्वाहा॥ व
क्र पुष्प स्वाहा॥ सिद्ध जंका स्वा न ने वृय अ म न विद्य मायल हास य धृती
वान॥ ॥ गर्पन विद्य॥ ज्ञापाया थ॥ ॥ धन वा क पूजा॥ ॥ वलि वि
य॥ ॐ आ ईं ह्रं व वा॥ ॥ अकाना मुखं सर्व धर्मी नामा धन रूपं न स्वा ग
ॐ आ ईं ह्रं स्वाहा॥ ॥ स्वां वाय॥ धमं वनाय स्वाहा॥ हान जकिने स्वाहा॥

माग गवाय स्वाहा॥ याग मूर्ख्य स्वाहा॥ या वाध वाय स्वाहा॥ ॐ आय स्वाहा
यमाय स्वाहा॥ वन मय स्वाहा॥ कु वनाय स्वाहा॥ अग नय स्वाहा॥ ॥ सुप्र
थम म न ॥ वलि गम थ॥ यागं वन हान जकिनि ॐ वलि मय मां सम न
स्यादि सहितं गृह्णं गृह्णं रपिव रमं म सर्व सत्त्वाना वन जा क न र या ग सिद्धि
क न र ईं ह्रं व वा॥ ॥ सिद्धि सुप्र॥ ॥ आ ग क न वान ॥ ॥ धन के गति
न॥ ॥ कृष्ण मान गृह्णं उल द न के ॥ कृष्ण॥ नम धी वक्र सं वनाय॥ नमा बुद्धाय
नमा धर्माय॥ नमः सं वाय॥ ॐ आ ईं धी म ग व ज सत्त्व सत् गृह्ण वन वन

६। कमलाय संमक हाना वलासन कनाय नमो ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु
युनमानमः ॥ एकेणा हं तानमस्यामि गुननाथ प्रसीदम ॥ ॥ सर्वहृद्धाने
संदाहं ऊगदर्थ प्रसाधकं विनामहि मिवागुहं श्री संवने नमाम्यहं ॥
गुहसुया ॥ गद्यपतिं च हने वं विधुना ऊं विनायेकं सर्वविघ्न हनदं गद्यो
पेनमाम्यहं ॥ ॥ नमो श्री महाकालाय ॥ कसन वं हं सवायूरं बुद्ध भामन
नकुं ॥ क। श्री कपाल धनं नाथं महाकालेन नमाम्यहं ॥ ॥ संगं याग ॥ आयु
हृदि यत्न ॥ नमो याग ॥ नृज संवीज संजातं ॥ ॥ सिद्धयाम ॥ नमो याग

वज्रवा नाहि ॥ ॥ माह नियात ॥ ऊं सुनिस्तुं निवेव ॥ ॥ वायुही या
नील नीलांजनी नाहा ॥ ॥ लाकपाल वलिया ॥ ॥ दया महाना जाल कपा
लामह हिंका ॥ दशदि कुस्त्रिणा वीना लाकपालेन नमाम्यहं ॥ ॥ हाऊपा ॥ दान
पग ऊजमानः सकल धर्म लभ विपनिवा नाक्षं सर्वं वां भनी नायुना नागवे
रव्यादि वगुर्वर्ग फल प्राफय श्री वज्र संव न वज्रवा नाहि गलस महाका
ल नंदी कश्चन वेधवध वायुही सकल देवता पूजन विष्णो अग्रगंधपु
ष्पधूपदीपनेत्रयादि तत्सर्वं विधिपनिपूर्तमस्तु ॥ मंगु हाने कियाह

